❀ श्रीराधामाधवौ जयतः ❀

स्वाध्याय रत्नमाला



❀ भगवान् श्रीराधामाधवजी ❀

श्रीराधामाधवौ दिव्यौ सौन्दर्याऽमृतसागरौ।
जयदेवसमाराध्यौ स्मरामि रसिकेश्वरौ॥

प्रकाशक : मुरलीध

श्री निम्बार्क ग्रन्थमाला का २६ वाँ पुष्प

श्री सर्वेश्वरो जयति



भगवते श्री निम्बार्काय नमः

卐 स्वाध्याय रत्नमाला 卐

[नित्यपाठोपयोगी]

卐

सम्पादक

पण्डित गोविन्ददास सन्त

धर्म शास्त्री पुराणतीर्थ

卐

प्रकाशक

पण्डित **मुरलीधर शास्त्री**

मु. प्रेमसरोवर [गाजीपुर] पो. बरसाना

जि. मथुरा (उत्तर प्रदेश)

प्रथम बार	मकर संक्रान्ति	न्यौछा[illegible]
१०००	वि. सं. २०३२	१) [illegible] (गा[illegible]

नम्र निवेदन :—

श्री निम्बार्क सम्प्रदायानुयायी सर्वसाधारण जनों को स्वसम्प्रदाय सिद्धान्त की जानकारी प्राप्त हो, इसी उद्देश्य से उक्त ग्रन्थमाला के छोटे-छोटे पुष्प सरल हिन्दी भाषा में गत कई वर्षों से प्रकाशित हो रहे हैं। अब तक इस ग्रन्थमाला के २५ पुष्प प्रकाशित हो चुके हैं। यह २६ वां "स्वाध्याय रत्नमाला" नामक पुष्प आपके करकमलों में प्रस्तुत है।

इस ग्रन्थमाला के सम्पादक परमश्रद्धेय पं० श्री गोविन्द दास जी 'सन्त' प्रचारमन्त्री अ० भा० श्री निम्बार्काचार्य पीठ ने इस पुष्प में नित्यपाठोपयोगी कई एक स्तोत्रों का सुन्दर संकलन कर दिया है जैसे—श्री युगल स्मरण, श्री गुरुवन्दना, मातृ-पितृ-वन्दना, शान्तिपाठ आदि मङ्गलाचरणपूर्वक परमोपयुक्त शिक्षावल्ली, पुरुषसूक्त, चतुःश्लोकी भागवत, वृत्र भागवत, भगवत्प्राप्ति हेतु श्री गोपी गीत, नेत्र विकार दूर करने हेतु चाक्षुषोपनिषद्, आदित्यहृदय भगवत्प्राप्ति एवं दुःस्वप्न विनाशार्थ गजेन्द्रमोक्ष, रक्षार्थ नारायणकवच तथा सुदर्शनकवच, ग्रहव्याधि दूर करने हेतु नवग्रह स्तोत्र, सप्तश्लोकी गीता और भगवत्प्रीत्यर्थ स्वसाम्प्रदायिक स्तोत्रों का संग्रहकर इस पुष्प को परम सौरभान्वित बना दिया है।

साथ ही साथ उक्त स्तोत्र को परम उपादेय जान प्रेमसरोवर (बरसाना) निवासी परमादरणीय पं० श्री मुरलीधरजी शास्त्री ने अपनी परम भक्तिमती माताजी की पुण्यस्मृति में इस को प्रकाशित भी करवा दिया है। भक्तजनों को चाहिये कि इसे नित्य पाठ में लेकर सम्पादक महोदयत था प्रकाशक महोदय श्रम को सफल बनाते हुए आत्म कल्याण के भागी बनें। आप महानुभाव भी जिनको भगवान ने धनसम्पन्न बनाया है, निम्बार्क ग्रन्थमाला के अन्य अप्रकाशित पुष्पों के प्रकाश– आर्थिक सहयोग प्रदान कर पुण्य और यश के भागी बन प्रचार प्रसार में हाथ बँटावें।

निवेदक—**नवल किशोर व्यास**

श्री सर्वेश्वरो जयति

भगवते श्री निम्बार्क महामुनीन्द्राय नमः

परिचयात्मक

—— दो शब्द ——

इस संसार में जीव एक पथिक (यात्री) बन कर आता है। 83, 99, 999 योनियाँ भोग लेने के पश्चात् इस जीव को उन नित्य दिव्य मङ्गल विग्रह भगवान् श्री सर्वेश्वर प्रभु की परम अहेतुकी अनुकम्पा से ही इस परमपावन वसुन्धरा पर देव दुर्लभ मानव शरीर संप्राप्त होता है जिसके लिए सुरवृन्द भी तरसते रहते हैं। जैसे कि "अहो अमीषां किमकारिशोभनम्". इत्यादि आठ श्लोकों द्वारा श्रीमद्भागवत स्कन्ध 5 अध्याय 19 में देवगीत वर्णित है। इस से अधिक स्पष्ट प्रमाण और क्या हो सकता है। इसमें भी यदि जगत्पिता, ब्रह्माजी के पुनीत मनोरथ के अनुसार "तद् भूरि भाग्यमिह जन्म किमप्यटव्याम्" श्री व्रजधरा धाम में प्रभुकृपाकिंकर प्राणी प्रकटे तो उसका तो कहना ही क्या है। तभी तो श्रीव्यासनारायण की लेखनी कुण्ठित हो जाती है और पुकार कर कह उठती है कि-"किं वर्ण्यते दिष्टमतो व्रजौकसाम्" इत्यादि सुलभ योग संप्राप्ता, हमारे पं० श्री मुरलीधरजी शास्त्री कथा व्यास जी की नित्यलीला प्राप्त परमपूज्या प्रातः स्मरणीया माता जी थी, जिनका जन्म पतितपावनी श्री यमुना के पावन तट स्थित (शेरगढ़) ब्रह्मपुरी में पं० श्री राधेलाल जी भदौरिया के घर पर हुआ। आपका जन्म नाम 'रेवती' रखा गया। विशाल परिवार की एक मात्र लाडली बेटी होने के नाते आपका बड़े ही दुलार से लालन-पालन हुआ। पाँच वर्ष की अवस्था से ही नित्य यमुना स्नान का आपका [illegible] था। आपका पाणिग्रहण संस्कार बरसाना के निकट प्रेम सरोवर (गा[illegible]

ग्राम] के सम्मानित मिश्र परिवार में पं० श्री रूपलाल जी मिश्र के पौत्र पं. श्री नन्दलालजी मिश्र के पुत्र पं. श्री कन्हैयालालजी मिश्र के साथ हुआ था। आपने पति परिवार में आकर अपने सदाचार, मृदु-भाषण, सेवा आदि से थोड़े ही समय में सर्वप्रियता प्राप्त की। आपने अपनी सासूजी की बड़ी ही सुश्रूषा की और उनका उन्हें शुभाशीर्वाद भी प्राप्त था। पण्डित जी के पिताजी का ऋषि जीवन था। आपको गो-सेवा एवं गो-पालन में बड़ा ही आनन्द मिलता था और सम्पूर्ण जीवन आपने गो-पालन में ही बिताया। उन्हीं की तपस्या का प्रतिफल आज हमारे पण्डित जी के पूरे परिवार को प्राप्त है। विधि के विधान के अनुसार युग्म दम्पत्ति का संयोग-वियोग होता ही है। इसी नियम से पण्डित जी की पूज्या माताजी को आज से 28 वर्ष पूर्व वह दुर्दिन आया और उन पर वैधव्य दुःख का वज्रपात हुआ किन्तु साहस एवं धैर्य से माताजी विचलित नहीं हुई और सभी कार्य उन्होंने अपने हाथ में लेकर अपने सम्मानित परिवार की मान प्रतिष्ठा में कोई भी कमी नहीं आने दी। धीरे-2 कार्यभार अपने सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्र पं० मुरलीधर जी शास्त्री पर सौंपा। पंडित जी के कार्य संचालन क्रम से आप की अन्तरात्मा पूर्ण सन्तुष्ट थी। जिस प्रकार आपका बाल्यकाल में श्री यमुना स्नान का नियम था, उसी प्रकार पतिगृह में आने के अनन्तर आपका पावन नियम श्री प्रेमसरोवर राज का नित्य स्नान एवं प्रातः सायं दोनों समय दैनिक परिक्रमा देने का चलता रहा। यह आप की तपश्चर्या थी। प्रतिदिन प्रेमसरोवर स्नान के अनन्तर दो घण्टा माला जप, तुलसी पूजन, ठाकुर दर्शन और श्री ठाकुर ललित बिहारी जी का चरणामृत लेकर प्रसाद पाना, फिर दिन भर माला जप चलता रहता था। कुछ दिन से एकान्त होकर श्री प्रेमसरोवर परिक्रमा के अनन्तर करती थी कि हे श्री प्रेमसरोवरराज ! मेरो लाला यहां जब ही मेरो शरीर छूटे। यह भी दैनिक क्रम चलता था। त जी की पूज्या मातु श्री की तपश्चर्या पूर्ण हुई और उस मनोरथ

के अनुसार ही एक ही दिन पूर्व पण्डित जी पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज की सन्निधि से अवकाश लेकर फाल्गुन शु० अष्टमी सं० 2028 के मध्याह्न में श्रीधाम वृन्दावन से आ गये और आते ही माता जी की चरण वन्दना की। पूज्या माता जी ने नेत्रों में आँसू भर कर कांपते हुए हाथों को पण्डित जी के शिर पर रख कर हृदय से शुभाशीर्वाद दिया और बोली लाला ! तू आय गयो, चलो चोखी भई, मैं हूँ यही चाह्यो करे ही कि मेरो लाला आ जाय। प्रेम से भोजन परोस के जिमायो, और बेटा ! तू हैरान है गयो है, अब तू नेक सोय जा। सायं 4 बजे अपने दैनिक नियम पालन को चली, परिक्रमा दयी, और आते समय सड़क पर गिर गई। ६५ वर्ष की आयु में इतना दैनिक साहस, यह सब उन की तपस्या का ही बल था सम्वाद मिलते ही पण्डित जी दौड़ कर गये और तुरन्त गोद में उठाकर ले आये। कोई भी विशेष चोट नहीं थी, फिर भी यथोचित डा० वैद्यों का जो भी योग था, तुरन्त लोग दौड़ कर डा० को लाये चिकित्सा हुई। माता जी के मुँह से श्री राधे-राधे की रटना प्रारम्भ हो गई। जब खाना पीना छोड़ दिया और श्री राधा रानी की रंगीली होली (फाल्गुन शु० ६) के दिन प्रातः 4 बजे नश्वर पार्थिव शरीर को त्याग दिव्य देह से दिव्य रंगीली महोत्सव में पहुंच गई। ग्राम वासियों की अभिलाषानुसार दादीजी की सभी ने हर्षोल्लास पूर्वक बड़े समारोह के साथ अन्तिम यात्रा निकाली और उनके अन्तिम सभी कार्य क्रम महोत्सव के रूप में मनाये गये। इसी अवसर पर पूज्यपाद श्रीमदाचार्य चरणों का सान्त्वनापत्र पण्डित जी को प्राप्त हुआ और आज्ञा हुई कि माता जी की पावन स्मृति में कुछ सर्वोपयोगी प्रकाशन होना चाहिए। श्रीचरणों की पवित्र आज्ञा को पण्डित जी ने शिरोधार्य कर यह सुमन माता जी की पुण्य स्मृति में प्रकाशित करा कर उनके समर्पण किया।

माताजी अपने पीछे से वृहद् परिवार में अपनी अङ्क से ललित एक पौत्र पं० शिवचरनलाल शास्त्री वर्तमान देवस्थान विभाग राज-स्थान में एक सुयोग्य प्रबन्धक का कार्य कर रहे हैं।

माता जी के पुत्र पं० श्री मुरलीधर जी शास्त्री तो विगत १६ साल से अ० भा० श्री निम्बार्काचार्य पीठाधिपति अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ राजस्थान में प्रचार विभाग कथा व्यास स्थान पर अवैतनिक सेवा कार्य कर रहे हैं। तथा ३ प्रपौत्र चि० श्री मदन-गोपाल, चि. कृष्णगोपाल तथा चि. श्री ब्रजगोपाल एवं २ प्रपौत्री गीतादेवी, इन्दिरादेवी गायत्रीदेवी छोड़ गई हैं। आपका पावन जीवन जिस प्रकार अनुकरणीय था, उसी प्रकार यह उनकी स्मृति में प्रकाशित होने वाला पुष्प भी ऐहिक किंवा पारमार्थिक सुख शान्ति में सभी के लिए उपयोगी रहेगा, ऐसी आशा है।

विनीत —

मकर संक्राति
वि० सं० २०३२
१४ जनवरी
१९७६ ई०

गोविन्ददास 'सन्त'
सम्पादक
श्री निम्बार्क ग्रन्थ माला
निम्बार्क कोट, अजमेर





समर्पणम्





स्नानात् सदा प्रेमसरोवरे या
जाता विशुद्धा रतिरच्युतांघ्रैः ।
तथैव सा दिव्यगतिं गता मां
विहाय माता सुतवत्सलाऽपि ॥



वात्सल्यपीयूषमहं पिबन् यन्
न तृप्तिमायामत एव मातः ।
त्वत्प्रीतये दिव्यकरारविन्दे
समर्पये सम्प्रति रत्नमालाम् ॥



पुण्य स्मृति दिवस
फाल्गुन शु० ६
वि० सं० २०२६

वात्सल्यभाजनम्--
मुरलीधर शास्त्री



—परमवन्दनीया मातुश्री—

ॐ भक्तिमती श्री रेवती देवी ॐ

स्वर्गवास : मिति फाल्गुन सुदी ६ बुधवार सं॰ २०२८
सन् १९७२

वात्सल्ये सुमनायति प्रतिदिनं जाप्ये च तल्लीनता
यस्या वै मुदितं मनः सुखयति श्रोत्राऽभिरामोरवः ।
सा मेऽन्तर्हृदये सदैव जननी श्रीरेवती राजतां,
वन्देऽहं चरणौ स्मरामि मनसा मातुर्गुणान् भावयन् ॥

—मुरलीधर शास्त्री

* प्रकाशक *



पं० श्री मुरलीधर शास्त्री
मु० प्रेमसरोवर (गाजीपुर)
पो० बरसाना, जि० मथुरा [उत्तर प्रदेश]



स्वाध्याय रत्नमाला--



पं० श्री मुरलीधरजी शास्त्री

के सुपुत्र

—चि. शिवचरण शास्त्री--

साथ में पौत्र पौत्री

चि. कृष्णगोपाल शर्मा, चि. ब्रजगोपाल शास्त्री

गायत्री देवी



श्री राधासर्वेश्वरो विजयते

।। भगवते श्री निम्बार्काय नमः ।।

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बर्काचार्य श्री श्रीजी
म हा रा ज

अध्यक्ष अ. भा. श्री निम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ [सलेमाबाद)

किशनगढ़ राजस्थान

का

— शु भा शी र्वा द —

वैदिक वाङ्मय में माता का स्थान बहुत ऊँचा है। यथा-मातृ देवो भव, आचार्य देवोभव, मातृमान् पितृवान् आचार्यवान् पुरुषो वेद" इन वेद वचनों में माता का प्रथम स्थान है। माता जीवन की मूलाधार है। जो मानव मातृ सेवा परायरण, मातृनिष्ठ एवं मातृ आदेशरत है, वह परम भाग्यशाली तथाभगवत् कृपाभाजन होता है। उसे इहलोक में विपुल सुख-समृद्धि तथा पुण्य लोकों में अखण्डानन्द वैभवों की उपलब्धि होती है। इसलिए माता जीवन की सर्वस्व निधि है।

अतीव हर्ष का विषय है कि विद्वद्वरेण्य पण्डितप्रवर भागवत भूषरण श्री मुरलीधर जी शास्त्री ने स्वकीय माता का जिस अनुपम भाव संवलित होकर सेवा सम्पादन किया है, वह निश्चय ही आदर्शपूर्ण प्रेरणाप्रद है। इसका ज्वलन्त उदाहरण श्री शास्त्री जी का अपनी माताजी के अवसान काल पर प्रवास में रहने पर भी अकस्मात दैवव-शात् उनके अंतिम क्षणों के पूर्व उनके सेवा कैङ्कर्य का परम सौभाग्य प्राप्त कर एक अभूत पूर्व मातृ भक्ति का उदाहरण प्रस्तुत कर देना है। श्री शास्त्रीजी की परम भक्तिमती माता श्री रेवतीदेवी का निरन्तर श्री युगल नाम स्मरण पूर्वक प्रेमसरोवर के पावन जल में प्रतिदिन स्नान

कवरा एक निष्ठा दर्शन कराने वाला अभूतपूर्व नियम था। इसी प्रकार श्री गिरिराज परिक्रमा बरसाने में श्री श्रीजी के दर्शन, नन्दगाँव में श्री नन्दलाला के दर्शन आदि-आदि उनके सुन्दरतम नियम थे। ऐसी प्रशस्त श्रेष्ठ माता का जीवन वृत्त निश्चित ही उद्बोधन कराने वाला होता है। श्री शास्त्री जी ने इसी लक्ष से उनकी पावन स्मृति में उनका जीवन चरित्र एवं "स्वाध्यायरत्नमाला" नामक ग्रन्थ का प्रकाशन कराया है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। श्रद्धालुजनों के लिए यह उपादेय रहेगी। शास्त्री जी का यह प्रयास परम श्लाघनीय है।

श्री शास्त्री जी का अ० भा० श्री निम्बार्काचार्य पीठ से अतिशय सम्बन्ध है। आपने २१ वर्ष से निरन्तर आचार्यपीठ के प्रचारादि कार्यों में अपनी सेवाएँ प्रस्तुत की हैं एवं अद्यावधि भी आप पीठ के प्रमुख विद्वानों में से हैं और सतत पीठ के वर्चस्व वर्द्धन के लिए संलग्न रहते हैं। भगवान् सर्वेश्वर श्री राधा-माधव से सपरिकर आपका सर्वाङ्गीण सुख-समृद्धि के लिए मंगलमयी शुभ कामना है

जननी रेवती पुण्या रेवती सम निर्मला।
राधिकाचिन्तने मग्नाऽभवद् व्रजे सुमंगला॥

यस्याऽऽत्मजो महाधीमान् श्री निम्बार्कपथानुगः।
भागवतप्रवक्ता च मुरलीधरपण्डितः।

निम्बार्काचार्य पीठस्य पण्डितः सुप्रचारकः।
एकविंशतिवर्षैश्च पीठसेवापरायणः।

मातृभक्तः पितृभक्तः कर्मठः शास्त्रपारगः।
राधा कृष्णाङ्घ्रि संन्निष्ठः राजते व्रजमण्डले॥



❊ श्रीसर्वेश्वरो जयति ❊



❊ श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्राय नमः ❊

स्वाध्याय रत्नमाला



❀ युगल प्रार्थना ❀

स्वभावतोऽपास्त समस्त दोष—
मशेषकल्याणगुणैकराशिम् ।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं
ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ॥ १ ॥

अङ्गे तु वामे वृषभानुजां मुदा
विराजमानामनुरूपसौभगाम् ।
सखी सहस्रैः परिसेवितां सदा
स्मरेम देवीं सकलेष्ट कामदाम् ॥२॥

❀ आचार्य वन्दना ❀

श्री हंसं च सनत्कुमारप्रभृतीन् वीणाधरं नारदं
निम्बादित्यगुरुं च द्वादश गुरून् श्री श्रीनिवासादिकान्
वन्दे सुन्दरभट्टदेशिकमुखान् वस्वेन्दु संख्या युतान्
श्रीव्यासाद्धरि मध्यगांश्च परतः सर्वान् गुरून् सादरम् ॥१॥

❀ श्री गुरु स्मरण ❀

आनन्द-मानन्द-करं प्रसन्नम्
ज्ञानस्वरूपं निज भावयुक्तम् !
योगिन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं
श्रीमद् गुरुं नित्यमहं स्मरामि ॥ १ ॥

❀ विप्र वन्दना ❀

नमो महद्भ्योऽस्तु नमः शिशुभ्यो
नमो युवभ्यो नम आबटुभ्यः ।
ये ब्राह्मणा गामवधूत लिङ्गा-
श्चरन्ति तेभ्यः शिवमस्तु नित्यम् ॥
[भा० ५ । १४ । २३]

ब्रह्मण्यदेवः पुरुषः पुरातनो
नित्यं हरिर्यच्चरणाभिवन्दनात् ।
अवाप लक्ष्मीमनपायिनीं यशो
जगत्पवित्रं च महत्तमाग्रणीः ॥
[४ । २१ । ३८]

❀ शान्ति पाठ ❀

ॐ शन्नो मित्रः शंव्वरूण शन्नोभवत्वर्यमा ।
शन्न इन्द्रो वृहस्पतिः शन्नो विष्णु रुरुक्रमः ॥ १॥
शन्नो वातः पवता ँ शन्नस्तपतु सूर्यः ।
शन्न कनि क्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु ॥ २॥
शन्नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ।
शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ ३ ॥
ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः-
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैः स्तुष्टुवा ँ सस्तनूभि-
र्व्यसेमहि देवहितं यदायुः ॥ ४ ॥
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णाद् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ ५ ॥

❀ शिक्षा वल्ली ❀

वेदमनूच्याचार्य्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति । सत्यं वद । धर्मंचर । स्वाध्यायान्मा प्रमद । आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुँ मा व्यवच्छेत्सी । सत्यान्न प्रमदितव्यम् । धर्मान्न प्रमदितव्यम् । कुशलान्न प्रमदितव्यम् । भूत्यै न प्रमदितव्यम् । स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् । देव-पितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् । मातृ देवो भव । पितृ देवो भव । आचार्य देवो भव ।

अतिथि देवो भव। यान्य न वद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि, तानित्वयोपास्यानि, नो इतराणि। ये के चास्मच्छे-यो सो ब्राह्मणास्तेषां त्वया ऽऽसने न प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। अथ यदि ते कर्म विचिकित्सा वा वृत्त विचिकित्सा वा स्यात् ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः; युक्ता आयुक्ताः अलूक्षा धर्म कामाः स्युः, यथा तेषु वर्तेरन्, तथा तेषु वर्ते था, एष आदेशः, एष उपदेषः एष वेदोपनिषत्, एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम्। एवमुचे तदुपास्यम्।

अर्थ— वेद पढ़ाकर आचार्य शिष्य को सदुपदेश कर रहे हैं। सत्य बोलो। धर्म का आचपण करो। स्वाध्यायं से कभी प्रमाद न करो। आचार्य को गुरु दक्षिणा देकर ही गृहस्थाश्रम में प्रवेश करो। सत्य का कभी किसी भी अवस्था में त्याग न करो। धर्म का कभी त्याग न करो। कल्याणकारी कर्मो का कभी त्याग न करो। साधन की जो विभूति प्राप्त है, उसे कभी मत त्यागो। स्वाध्याय और प्रवचन में कभी प्रमाद न करो। देव और पितृ कर्म अर्थात् यज्ञ एवं श्राद्ध, तर्पणादि का कभी त्याग न करो। मातृ भक्त बनो। पितृ भक्त बनो। आचार्य का सम्मान करो। अतिथि का सत्कार करो। जो कर्म निन्दा रहित हैं, उन्हीं को करो। निन्दित कर्म न करो। हमारे परम्परागत श्रेष्ठ आचरणों का पालन करो, दूसरों का नही। जो अपने में श्रेष्ठ ब्राह्मण हों

उनके आसन पर मत बैठो। श्रद्धा से दो। अश्रद्धा से भी दो। धनवान होने पर भी दान दो, । अर्थात् लक्ष्मी चंचला है, उसे प्रभु की सेवा में समर्पण नहीं करोगे तो वह तुम्हें छोड़कर चली जायगी]। लोक लाज के लिए ही दान करो। शास्त्र के डर से दान करो। दान करना कर्तव्य है,इस विवेक से दान करो। अपने किसी कर्म अणवा लौकिक आचार के सम्बन्ध में मन में कोई शंका उत्पन्न हो जाय तो अपने समीप रहने वाले ब्राह्मणों में जो वेद विहित कर्मों में विचारशील हों, समदर्शी हों, कुशल हों, स्वतन्त्र हों, ,अथाँत् किसी के प्रभाव में आकर व्यवस्था देने वाले न हों, क्रोध रहित हों, शान्त स्वभाव हो, और धर्म के लिए ही कर्तव्य पालन करनेवाले हों, वे जिस प्रकार की व्यवस्था दें, उसी प्रकार का आचरण तुम करो। यही आदेश है, यही उपदेश है, यही वेदों का सार है, यही आज्ञा है। ऊपर बतलायी हुई प्रणाली से ही आचरण करने चाहिए।



अथ पुरुष सूक्तम्

हरिः ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भुमिꣳ सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥ १ ॥
पुरुष एवेदꣳ सर्बं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति ॥ २ ॥
एतावानस्य महिमा तो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥
त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशना न शनेऽअभि ॥ ४ ॥
ततोविराड जायत विराजोऽअधि पूरुषः ।
सजातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ ५ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चके वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ ८ ॥
तं यज्ञं र्बाहिषि प्रोक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्याः ऋषयश्च ये ॥ ९ ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरुपादा उच्येते ॥ १०

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः !
ऊरूतदस्य यद्वैश्य पद्भ्या ँ शूद्रोऽअजायत ॥ ११ ॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥

नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ २अकल्पयन् ॥१३॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धबिः ॥१४॥

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥१५॥

यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याःसन्तिदेवाः॥

अद्भ्यःसम्भृतः पृथिव्यैरसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे ।
तस्यत्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ।१७

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसःपरस्तात् ।
तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यःपन्था विद्यतेऽयनाय ॥

प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तर-

जायमानो वहुधा विजायते ।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति
धीरास्तमिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ।१९।

यो देवेभ्यो आतपति यो देवानां पुरोहितः ।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥२०॥

रुचं ब्राम्ह जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।
यस्त्वैवं ब्राम्हणो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे ॥२१॥

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो
रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनो व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणा मुं मऽइषाण
सर्वलोकं मऽइषाण ॥ २२ ॥

इति यजुर्वेद संहितायां (पुरुष सूक्तम्) ३१वाँ अध्याय।



चतुःश्लोकी भागवत



अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत् परम् ।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥

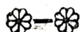
ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि ।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः ॥

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु ।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ॥

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्वजिज्ञासुनाऽत्मनः ।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा ॥

[भा० २।६।३२ से ३५]

वृत्र-भागवत



अहं हरे तव पादैकमूल
दासानुदासो भवितास्मि भूयः ।
मनः स्मरेतासुपतेर्गुणांस्ते
गृणीत वाक् कर्म करोतु कायः ॥

न नाकपृष्ठं न च पारमेष्ठ्यं
न सार्वभौमं न रसाधिपत्यम् ॥
न योग सिद्धिरपुनर्भवं वा
समञ्जस त्वां विरहय्य कांक्षे ॥
अजात पक्षा इव मातरं खगाः
स्तन्यं यथा वत्सतराः क्षुधार्ताः ।
प्रियं प्रियेव व्युषितंविषण्णा
मनोऽरविन्दाक्ष दिदृक्षते त्वाम् ॥
ममोत्तमश्लोकजनेषु सख्यं
संसारचक्रे भ्रमतः स्वकर्मभिः ।
त्वन्मायया ऽऽत्मात्मजदारगेहे-
ष्वासक्तचितस्य न नाथ भूयात् ॥
[भा० ६।११।२४ से २७]

* गोपी गीत *



गोप्य ऊचुः—

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः
श्रयत इन्दरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि
धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥ १ ॥

शरदुदाशये साधुजात-
सत्सरसिजोदर श्रीमुषा दृशा ।
सुरतनाथ तेऽशुल्क दासिका
वरद निघ्नतो नेह किं वधः ॥ २ ॥

विषजलाप्ययात् व्यालराक्षसात्
वर्षमारुताद् वैद्युतानलात् ।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभया-
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥ ३ ॥

न खलु गोपिकानन्दनो भवा-
नखिल देहिनामन्तरात्मदृक् ।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥ ४ ॥

विरचिताभय वृष्णि धूर्य ते
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् ।
कर सरोरुहं कान्त कामदं
शिरसि धेहिनः श्रीकरग्रहम् ॥ ५ ॥

व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां
निज जन स्मय ध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किङ्करीः स्मनो
जलरुहाननं चारु दर्शय ॥ ॥

प्रणत देहिनां पापकर्शनं
तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं
कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥ ७ ॥

मधुरया गिरा वल्गु वाक्यया
बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधि करीरिमा वीर मुह्यती
रधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥ ८ ॥

तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवण मङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृहणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥ ९ ॥

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं
विहरणं च ते ध्यान मङ्गलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः
कुहक नो मनः क्षोभयान्ति हि ॥ १० ॥

चलसि यद् व्रज चारयन् पशून्
नलिन सुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीतिनः
कलि लतां मनः कान्त गच्छति ॥ ११ ॥

दिन परिक्षये नीलकुन्तलै-
वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।
धनरजस्वलं दर्शयन् मुहु-
र्मनसिनः स्मरं वीर यच्छसि ॥१२॥

प्रणत कामदं पद्मजार्चितं
धरणि मण्डनं ध्येयमापदि ।
चरण पङ्कजं शन्तमंचते
रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥१३॥

सुरतबर्धनं शोकनाशनं
स्वरित वेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतरराग विस्मारिणां नृणां
वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥१४॥

अटति यद् भवानह्नि काननं
त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।
कुटिल कुन्तलं श्रीमुखं च ते
जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ॥१५॥

पति सुतान्वय भ्रातृ बान्धवा
नति विलंघ्य तेऽन्त्यच्युतागताः ।
मतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः
कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥१६

रहसि संविदं हृच्छयोदय
प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।
वृहदुरः श्रियोवीक्ष्य धामते
मुहुरति स्पृहा मुह्यते मनः ॥१७॥

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्गते
वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम्
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां
स्वजन हृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥१८॥

यत्ते सुजात चरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु
तेनाटवीमटसि तद् व्यथतेन किंस्वित्
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषांनः ॥१९॥

❀ नेत्रोपनिशद् ❀

अथातश्चाक्षुष्मतीं विद्यां पठित सिद्धां चक्षुरोग हरां व्याख्यास्यामः। यया चक्षुरोगाः सर्वतो नश्यन्ति चक्षुषो दीप्तिर्भवति तस्याह चाक्षुषी विद्यायाः अहिर्बुध्न्य ऋषि र्गायत्री छन्दः श्रीसूर्यो देवता चक्षुरोग निवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ चक्षुष् २ चक्षुष् तेजः स्थिरो भव मायाहि २ त्वरितं चक्षुरोगान् शमय २ मम जात रूपं तेजो दर्शय २ ययाह मन्धो न स्याम् तथा कल्याणं कुरु २ यानि २ मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधक दुष्कृतानि तानि २ सर्वाणि निर्मूलय २ ॐ चक्षुष् तेजोदात्रे दिव्य भास्कराय। ॐ नमः करूणाकरायामृताय। ॐ नमः श्री सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षि तेजसे नमः। असतो मां सद्गमयः। तमसो मां ज्योतिर्गमय। मृत्यो-र्माममृ तंगमय। उष्णो भगवान् शुचि रूपः हंसो भग-वान् शुचि रप्रतिरूपः य इमां चाक्षुष्मतीं बिद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति, न तस्य कुलेऽन्धो भवति, अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्या सिद्धि र्भवति, ॐ विश्व रूपं घृणितं जात वेदसं हिरणमयं पुरुषं ज्योतिरूपंतं सहस्त्ररूपं तं सहस्त्र रश्मि शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येषः सूर्यः। ॐ नमो भग-वते आदित्याय अहोवाहिन्यहोबाहिनी स्वाहा॥

इति श्री अथर्वणवेदोक्त नेत्रोपनिषद् सम्पूर्ण॥

❀ सप्त श्लोकी गीता ❀

ओमित्येकाक्षरं व्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥१॥

स्थानेहृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्ध संघाः ॥२॥

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षि शिरोमुखम् ।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ।४।

कविं पुराणमनुशासितार–
मणोरणियां समनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसःपरस्तात् ॥४॥

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ।५।

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानपपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेववेद्यो
वेदान्त कृद्वेद विदेव चाहम् ।६।

मन्मना भवमद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्तैव–मात्मानं मत्परायणः ।७।

卐 गजेन्द्रमोक्ष 卐



: श्रीशुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि ।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ॥१॥

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम् ।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ॥२॥

यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम् ।
योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ॥३॥

यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं
क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम् ।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते
स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः ॥४॥

कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो
लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु ।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं
यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः ॥५॥

न यस्य देवा ऋषयः पदं विदु-
र्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम् ।

यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो
दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु ॥६॥
दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं ।
विमुक्तसङ्गाः मुनयः सुसाधवः ।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने
भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः ॥७॥
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा
न नामरूपे गुणदोष एव वा ।
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः
स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ॥८॥
तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥९॥
नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने ।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ।१०॥
सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता ।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ॥११॥
नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे ।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ॥१२॥

क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे ।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ॥१३॥
सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे ।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः॥१४।

नमो नमस्तेऽखिलकारणाय
निष्कारणायाद्भुतकारणाय ।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय
नमोऽपवर्गाय परायणाय ॥१५॥

गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय
तत्क्षोभविस्फूर्जितमानमाय ।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागम-
स्वयम्प्रकाशाय नमस्करोमि ॥१६॥

मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय
मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय ।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत-
प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥१७॥

आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तै-
र्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय ।

मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय
ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥१८॥

यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा
भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति ।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं
करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम् ॥१९॥

एकान्तिनो यस्य न कंचनार्थं
वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः ।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं
गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः ॥२०॥

तमक्षरं ब्रह्म परं परेश--
मव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूर-
मनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ॥२१॥

यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः ।
नानरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः ॥२२॥

यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो
निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः ।

तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो
बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥२३॥
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ्
न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः ।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन्
निषेधशेषो जयतादशेषः ॥२४॥
जिजीविषे नाहमिहामुया कि-
मन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लव-
स्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥२५॥
सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम् ।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ॥२६
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते ।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ।२७
नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेग-
शक्तित्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये
कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ॥२८॥

नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहं धिया हतम् ।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ।२९।

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं
ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्
तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ॥३०॥

तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः ।
छन्दोमयेन गरूडेन समुह्यमान-
श्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः ।।३१।

सोऽन्तस्सरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो
दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम् ।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
न्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते ।।३२।

तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार ।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं
सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम् ।।३३।।

* श्री नारायण कवच *

अङ्गन्यास करन्यास

पाठ कर्त्ता सर्वप्रथम हाथ-पाँव धोकर, आचमन कर, पवित्री धारण करके उत्तर दिशा की ओर मुख करके आसन बिछा कर बैठ जाय, तदनन्तर विनियोग पढ़ कर द्वादशाक्षरी, अष्टाक्षरी एवं षडक्षरी मन्त्र से न्यासादि कर पाठ प्रारम्भ करे। बीच में किसी दूसरे से बोले नहीं।

विनियोगः—

ॐ अस्य श्रीनारायणकवचस्य भगवान् श्रीवेदव्यास-ऋषिरनुष्टुप्त्रिष्टुपौ छन्दसी श्रीविष्णु परमात्मा देवता ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे श्रीनारायणकवचपाठे विनियोगः।

अङ्गन्यासः—

ॐ ॐ नमः पादयोः। ॐ नं नमः जानुनोः। ॐ मों नमः ऊर्वोः। ॐ नां नमः उदरे। ॐ रां नमः हृदि। ॐ यं नमः उरसि। ॐ णां नमः मुखे। ॐ यं नमः शिरसि।

करन्यासः—

ॐ ॐ नमः दक्षिण तर्जन्याम्। ॐ नं नमः दक्षिण मध्यमायाम्। ॐ मों नमः दक्षिणानामिकायाम्। ॐ भं नमः दक्षिणकनिष्ठिकायाम्। ॐ गं नमः वामकनिष्ठिकायाम्। ॐ वं नमः वामानामिकायाम्। ॐ तें नमः वाममध्यमायाम्। ॐ वां नमः वामतर्जन्याम्। ॐ सु नमः दक्षिणाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि। ॐ दें नमः दक्षिणांगुष्ठाधःपर्वणि। ॐ वां नमः वामांगुष्ठोर्ध्वपर्वणि। ॐ यं नमः वामाङ्गुष्ठाधःपर्वणि।

षडक्षरन्यासः

ॐ ॐ नमः हृदये। ॐ विं नमः मूर्धनि। ॐ षं नमः भ्रुवोर्मध्ये। ॐ णं नमः शिखायाम्। ॐ वें नमः नेत्रयोः। ॐ नं नमः सर्वसन्धिषु।

दिग्बन्धः—

ॐ मः अस्त्राय फट् प्राच्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् आग्नेयाम् । ॐ मः अस्त्राय फट् दक्षिणस्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् नैऋत्ये । ॐ मः अस्त्राय फट् प्रतीच्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् वायव्ये । ॐ मः अस्त्राय फट् उदीच्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् ऐशान्याम् । ॐ मः अस्त्राय फट् ऊर्ध्वायाम् । ॐ मः अस्त्राय फट् अधरायाम् ।

अथ श्रीनारायणकवचम्

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान् ।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम् ॥१॥
भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम् ।
यथाऽऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे ॥२॥

श्री शुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते ।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु ३॥

विश्वरूप उवाच

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः ।
कृतस्वाङ्गकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः ॥४॥
नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते ।
पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि ॥५॥

मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत् ।
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा। ६।।
करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया ।
प्रणवादियकारान्तमङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु ।।७।
न्यसेद्धृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि ।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत् ।।८।
वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसंधिषु ।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः ।।९।।
सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत् ।
ॐ विष्णवे नम इति ।।१०।।
आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम् ।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत् ।।११।।
ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां
न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्र पृष्ठे ।।
दरारिचर्मासिगदेषुचाप-
पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः ।।१२।।
जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्ति-
र्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात् ।

स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात्
त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः ॥१३॥
दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः
पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः ।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं
दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः ॥१४॥
रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः
स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः ।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे
सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान् ॥१५॥
मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा-
न्नारायणः पातु नरश्च हासात् ।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः
पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात् ॥१६॥
सनत्कुमारोऽवतु कामदेवा-
द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात् ।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात्
कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् ॥१७॥

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद्
द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा ।
यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद्
बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ॥१८॥

द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद्
बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात् ।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु
धर्मावनायोरुकृतावतारः ॥१९॥

मां केशवो गदया प्रातरव्याद्
गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः ।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्ति--
र्मध्यंदिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥२०॥

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा
सायं त्रिधामावतु माधवो माम् ।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे
निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥२१॥

श्रीवत्सधामापररात्र ईशः
प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः ।

दामोदरोऽव्यादनुसंध्यं प्रभाते
विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥२२॥

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि
भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम् ।
दंदग्धि दंदग्ध्यरिसैन्यमाशु
कक्षं यथा वातसखो हुताशः ॥२३॥

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे
निष्पिण्ढि निष्पिढ्यजितप्रियासि ।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो-
भूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन् ॥२४॥

त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृ--
पिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन् ।
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो
भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन् ॥२५॥

त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्य--
मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि ।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय
द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम् ॥२६॥

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च ।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा ॥२७॥
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रीकीर्तनात् ।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः ॥२८॥
गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः ।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विश्वक्सेनः स्वनामाभिः ॥२९॥
सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः ।
बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः ॥३०॥
यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत् ।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः ॥३१॥
यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम् ।
भूषणायुधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तिः स्वमायया ॥३२॥
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः ।
पातु सर्वैः सरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः ॥३३॥
विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्ता-
दन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः ।
प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन
स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः । ३४॥
मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम् ।

विजेष्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान् ॥३५॥
एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा ।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते ॥३६॥
न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत् ।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित् ॥३७॥
इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः ।
योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स मरुधन्वनि ॥३८॥
तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा ।
ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः ॥३९॥
गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः ।
स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः ।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात् ॥४०॥

श्री शुक उवाच

य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः ।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात् ॥४१॥
एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः ।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान् ॥४२॥

इति नारायणकवचं सम्पूर्णम्

❀ अथ श्री सुदर्शन कवचम् ❀

श्रीमते निम्बार्काय नमः ॥ ॐ अस्य श्री सुदर्शन कवच महामंत्रस्य-अहिर्बुध्न्यो भगवान ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्री सुदर्शन महापुरुषो विष्णुर्देवता ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं श्रीसुदर्शन प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्राय ऐन्द्रीं दिशं चक्रेण वध्नामि ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्राय आग्नेयीं दिशं चक्रेण वध्नामि ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्राय दक्षिणां दिशं चक्रेण वध्नामि ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्राय नैऋत्यां दिशं चक्रेण वध्नामि ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्राय वारुणीं दिशं चक्रेण वध्नामि ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्राय वायवीं दिशं चक्रेण वध्नामि ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्राय कौबेरीं दिशं चक्रेण वध्नामि ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्राय ऐशानीं दिशं चक्रेण वध्नामि ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्राय ऊर्ध्वदिशं चक्रेण वध्नामि ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्राय अधो दिशं चक्रेण वध्नामि ॥ ॐ नमो भगवते ज्वाला चक्रायेति सर्वतोदिग् वन्धनम् ॥ ॐ सहस्रार हुं फट् इति

षडक्षरं अष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ ॐ सुदर्शनाय विद्महे हेति राजाय धीमहि तन्नश्चक्रं प्रचोदयात् ॥ इति षडक्षरमंत्र गायत्री ॥ ॐ सुर्दशन महा ज्वाल कोटि सूर्य सम प्रभः । अज्ञानान्धस्य मे देव विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय ॥१॥

यस्य स्मरण मात्रेण विद्रवन्त्यसुरादयः ।
सहस्त्रार नमस्तुभ्यं विष्णुः पाणितलाश्रयः ॥२॥
क्षिप्त्वा सुदर्शनं चक्रं ज्वालामालाति भीषणम् ।
सर्वरोग प्रशमनं कुरु देववराऽच्युतः ॥३॥
सुदर्शन महाचक्र गोविन्दस्य करायुध ।
तीक्ष्णधार महावेग ! सूर्य कोटि सम प्रभः ॥४॥
त्रैलोक्यं रक्ष रक्ष त्वं दुष्ट दानव मर्दन ।
सुदर्शन महाज्वाल छिन्धि छिन्धि महागदम् ॥५॥
छिन्धि वातं च पित्तं च छिन्धि घोरं महाविषम् ।
रुजं दाहं च शूलं च निमिषं ज्वाल गर्दभम् ॥६ ।
सुदर्शनस्य मन्त्रेण ग्रहाः यान्तु दिशो दशः ॥

ॐ अस्य श्रीसुदर्शन मन्त्रस्य अहिर्बुध्न्य ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीसुदर्शन देवता श्रीसुदर्शन मन्त्र जपे विनियोगः ।

अथ करन्यासः

ॐ अचक्राय स्वाहा--अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ विचक्राय स्वाहा—तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ सुचक्राय स्वाहा----मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ त्रैलोक्यरक्षणचक्राय स्वाहा-अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ज्वाला चक्राय स्वाहा— कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ असुरान्तकचक्राय स्वाहा---करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादि न्यासः

ॐ अचक्राय स्वाहा—हृदयाय नमः।

ॐ विचक्राय स्वाहा---शिरसे स्वाहा।

ॐ सुचक्राय स्वाहा—शिखायै वषट्।

ॐ त्रैलोक्यरक्षणचक्राय स्वाहा--कवचाय हुं।

ॐ ज्वाला चक्राय स्वाहा तेजसे--नेत्राभ्यां वौषट्।

ॐ असुरान्तक चक्राय स्वाहा--अस्त्राय फट्।

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिङ् वन्दनम्।

मन्त्र---ॐ नमो भगवते भो भो सुदर्शन दुष्ट दारिद्र्य दुरितानि हन हन, पापं मथ मथ, ममारोग्यं कुरु कुरु ठः ठः ह्रां ह्रीं ह्रूं ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहा ।

ॐ त्रैलोक्यभयकर्तारमाज्ञापय जनार्दन ।
सर्व दुःखानि रक्षांसि क्षयं नयतु सत्वरम् ॥७॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च दक्षिणोत्तरयोस्तथा ।
रक्षां करोतु सर्वत्र नृसिंहश्च स्वगर्जितैः ॥८॥
श्रीमहावैष्णवाक्ष हन हन फट् स्वाहा ।
ॐ सहस्रादित्यसंकाशं सहस्रवदनं परम् ।
सहस्रदोः सहस्रारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥९॥
हेमन्तं हारकेयूरकटकांगदभूषणम् ।
भूषणोद्भासिततनुं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥१०॥
स्राकार सहितं मंत्रं जपतां शत्रु नाशनम् ।
सर्वदोष-प्रशमनं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥११॥
रणत्किंकिणिजातेन राक्षसघ्नं महाद्भुतम् ।
व्याप्तकेशं विरूपाक्षं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥१२॥
हुंकारं भैरवं भीमं प्रणतार्तिहरं प्रभुम् ।
सर्वदोषप्रशमनं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम् ॥१३॥

फट्कारान्तमनिर्देश्यं शान्तं मन्त्रेण संयुतं।
शुभं प्रशान्तवदनं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्॥१४॥
एतैः षड्भिस्तु देवानां प्रसन्नं श्रीसुदर्शनम्।
रक्षां करोति सर्वात्मा सर्वत्र विजयी भवेत्॥१५॥
सर्वं विघ्नं सर्वदोषान् विनाशयति सत्वरम्।

तं देव देव मुनिवन्दितपादपीठं
चक्रादि षोडशभुजं ज्वलनप्रकाशम्।
नानाविधाभरणभूषितसर्वगात्रं
चक्रादिदेवमनिशं हृदि चिन्तयामि॥

अथध्यानम्

शङ्खं चक्रं च चापं शर परशुधरं शूल-पाशांकुशाक्षं
बिभ्राणं वज्रखेटं हलमुसलगदादन्तमत्युग्रदंष्ट्रम्।
ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूरभूषं
ध्याये षट्कोणसंस्थं सकलरिपुगण प्राणसंहारचक्रम्।

ॐ नमो भगवते सुदर्शनाय, महद्गदमहाचक्रमहानेत्र भयंकराय, सर्वदुष्टभयंकराय, सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय, परयन्त्रान् ग्रस ग्रस, भक्षय भक्षय, पर विद्यां च ग्रस ग्रस,

भक्षय भक्षय, दैत्यदानवब्रह्मराक्षसान् ग्रस ग्रस भक्षय भक्षय, शाकिनी डाकिनी वेतालादीन् ग्रस ग्रस भक्षय भक्षय गन्धर्वयक्षभूतप्रेतपिशाचान् ग्रस ग्रस, दह दह, मर्दय मर्दय, छिन्धि भिन्धि खादय खादय, कालय कालय, कुरु कुरु, ॐ फट् स्वाहा। श्रीचक्राय सुदर्शनाय नमः स्वाहा।

भूम्यन्तरिक्षे च तथा पार्श्वतः पृष्ठतोग्रतः।
रक्षां करोतु भगवान् विश्वरूपो जनार्दनः॥
यथा विष्णोः स्मृतेः सद्यः संक्षयं यान्ति पातकं।
तथा मे सकलं दुःखं प्रशाम्यतु सुदर्शनः॥
इदं रूपं विचित्रं वै सर्वथा भयनाशनं।
सर्वाभीष्टप्रदं नित्यं सर्वरोगनिवारणम्॥

॥ इति सुदर्शनकवचं सम्पूर्णम् ॥

आदित्यहृदयस्तोत्रम्

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो ! आदित्याय नमो नमः॥

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥१॥

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् ।
उपगम्याऽब्रवीद् राममगस्त्यो भगवाँस्तदा ॥२॥
राम ! राम ! महाबाहो ! शृणु गुह्यं सनातनम् ।
येन सर्वानरीन् वत्स ! समरे विजयिष्यसे ॥३॥
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रु विनाशनम् ।
जयावहं जपेन्नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥४॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
चिन्ता-शोक-प्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥५॥
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवाऽसुर-नमस्कृतम् ।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥६॥
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः ।
एष देवः सुरगणाँल्लोकान् पातु गभस्तिभिः ॥७॥
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः ।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपांपतिः ॥८॥
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः ।
वायुर्वह्निः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥९॥
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान् ।
सुवर्णस्तपनो भानुः स्वर्णरेता दिवाकरः ॥१०॥

हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ॥११॥
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनो भास्करो रविः ।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ॥१२॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः ।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः ॥१३॥
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः ।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥१४॥
नक्षत्र-ग्रह-ताराणामधिपो विश्वभावनः ।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मा नमोऽस्तु ते ॥१५॥
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥१६॥
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः ।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥१७॥
नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः ।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ॥१८॥
ब्रह्मेशानाऽच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे ।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥१९॥

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायाऽमितात्मने ।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥२०॥
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे ।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥२१॥
नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः ।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥२२॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
एष चैवाऽग्निहोत्रं च फलं चैवाऽग्निहोत्रिणाम् ॥२३॥
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः । २४॥
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च ।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघवः ॥२५॥
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥२६॥
अस्मिन् क्षणे महाबाहो ! रावणं त्वं जहिष्यसि ।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥२७॥
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥२८॥

आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥२९॥
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धार्थं समुपागतम् ।
सर्वयत्नेन महता वधे तस्य धृतोऽभवत् ॥३०॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं
मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः ।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा
सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥३१॥

इत्यादित्यहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ नवग्रहस्तोत्रम्

जपा-कुसुम-संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥
दधि-शङ्ख-तुषाराभं क्षीरोदार्णव-सम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥२॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ।।३।।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।।४।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।५।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।६।।
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्त्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।७।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य-विमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।८।।
पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।९।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।।१०।।
नर-नारी-नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।११।।
ग्रह-नक्षत्रजाः पीडास्तस्करा-ऽग्नि-समुद्भवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।१२।।

इति व्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं समाप्तम् ।

वेदान्त दशश्लोकी

ज्ञानस्वरूपञ्च हरेरधीनं, शरीरसंयोगवियोगयोग्यम् ।
अणुं हि जीवं प्रतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः ।१
अनादि मायापरियुक्तरूपं, त्वेनं विदुर्वै भगवत्प्रसादात् ।
मुक्तञ्च बद्धं किलबद्धमुक्तं, प्रभेदबाहुल्यमथापि बोध्यम् ।२
अप्राकृतं प्राकृतरूपकञ्च, कालस्वरूपं तदचेतनं मतम् ।
मायाप्रधानादिपदप्रवाच्यं, शुक्लादिभेदाश्च समेऽपि तत्र ।३
स्वभावतोऽपास्त--समस्तदोषमशेषकल्याणगुणैक--राशिम् ।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं,ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम्।४
अङ्गे तु वामे वृषभानुजां मुदा, विराजमानामनुरूपसौभगाम् ।
सखीसहस्त्रैः परिसेवितां सदा,स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम् ५
उपासनीयं नितरां जनैः सदा, प्रहाणयेऽज्ञानतमोऽनुवृत्तेः ।
सनन्दनाद्यैर्मुनिभिस्तथोक्तं,श्रीनारदायाखिलतत्त्वसाक्षिणे ।
सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकं,श्रुतिस्मृतिभ्यो निखिलस्य वस्तुनः
ब्रह्मात्मकत्वादिति वेदविन्मतं,त्रिरूपतापिश्रुतिसूत्रसाधिता ।७
नान्या गतिः कृष्णपदारविन्दात्, संदृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितात्
भक्तेच्छयोपात्तसुचिन्त्यविग्रहादचिन्त्यशक्तेरविचिन्त्यसाशयात्
कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते, यया भवेत्प्रेमविशेष लक्षणा ।
भक्तिर्ह्यनन्याधिपतेर्महात्मनः सा चोत्तमासाधनरूपिकाऽपरा।९
उपास्यरूपं तदुपासकस्य च, कृपाफलं भक्तिरसस्ततः परम् ।
विरोधिनोरूपमथैतदाप्तेर्ज्ञेया इमेऽर्था अपि पञ्च साधुभिः ।१०

अनन्त श्री विभूषित जगद्‌गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी'
श्री सर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज कृत—

॥ श्री गोपीजनवल्लभाष्टक-स्तोत्रम् ॥

नवाम्बुदानीक-मनोहराय, प्रफुल्लराजीव-विलोचनाय ।
वेणु-स्वनाऽऽमोदितगोकुलाय, नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥१

किरीट-केयूर-विभूषिताय, ग्रैवेय-मालामणि-रञ्जिताय ।
स्फुरल्लसत्कांचन-कुण्डलाय, नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥२

दिव्याङ्गनावृन्द निषेविताय, स्मितप्रभाचारुमुखाम्बुजाय ।
त्रैलोक्यसंमोहन सुन्दराय, नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥३

रत्नाद्रि-मूलालय-संगताय, कल्पद्रुमच्छाय-कृतासनाय ।
हेमस्फुरन्मण्डपमध्यगाय, नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥४

श्रीवत्सरोमावलिरंजिताय, वक्षस्थले कौस्तुभ-भासिताय ।
सरोजकिंजल्कनिभांशुकाय, नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥५

दिव्याङ्गुलीयांगुलि-रंजिताय, मयूर-पिच्छच्छवि-शोभिताय ।
दिव्याम्बरालंकृत-विग्रहाय, नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥६

मुनीन्द्रवृन्दैर्विधि-संस्तुताय, रक्षोगणाद् गोकुलरक्षकाय ।
धर्मार्थ-कामामृत-साधनाय, नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥७

मनस्तमस्तोमदिवाकराय, भक्तेष्टचिन्तामणिसन्निधाय ।
अशेष-दुर्नामजभेषजाय, नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥८

❁

* आद्याचार्य जगगुरु श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्र प्रणीत *

प्रातः स्तवराजः

प्रातः स्मरामि युगकेलिरसाभिषिक्तं,
वृन्दावनं सुरमणीयमुदारवृक्षम् ।
सौरी प्रवाहवृतमात्मगुणप्रकाशं,
युग्माङ्घ्रिरेणुकणिकाञ्चितसर्वसत्वम् ॥१॥

प्रातः स्मरामि दधिघोषविनीतनिद्रं,
निद्रावसान-रमणीयमुखानुरागम् ।
उन्निद्र-पद्मनयनं नवनीरदाभं,
हृद्यानवद्यललनाञ्चितवामभागम् ॥२॥

प्रातर्भजामि शयनोत्थितयुग्मरूपं,
सर्वेश्वरं सुखकरं रसिकेशभूपम् ।
अन्योन्यकेलिरसचिन्हसखीदृगौघं,
सख्यावृतं सुरतकाममनोहरञ्च ॥३॥

प्रातर्भजे सुरतसारपयोधिचिन्हं,
गण्डस्थलेन नयनेन च सन्दधानौ ।
रत्याद्यशेषशुभदौ समुपेतकामौ,
श्रीराधिकावरपुरन्दरपुण्यपुञ्जौ ॥४॥

प्रातर्धरामि हृदयेन हृदीक्षणीयं,
युग्मस्वरूपमनिशं सुमनोहरञ्च ।
लावण्यधामललनाभिरुपेयमान-
मुत्थाप्यमानमनुमेयमशेषवेषैः ॥५॥

प्रातर्ब्रवीमि युगलावपि सोमराजौ,
राधामुकुन्दपशुपालसुतौ वरिष्ठौ ।
गोविन्दचन्द्रवृषभानुसुतावरिष्ठौ,
सर्वेश्वरौ स्वजनपालनतत्परेशौ ॥६॥
प्रातर्नमामि युगलांघ्रिसरोजकोश–
मष्टाङ्गयुक्त वपुषा भवदुःखदारम् ।
वृन्दावने सुविचरन्तमुदारचिन्हं,
लक्ष्म्या उरोजधृतकुङ्कुमरागपुष्टम् ॥७॥
प्रातर्नमामि वृषभानुसुता पदाब्जं,
नेत्रालिभिः परिणुतं, वृजसुन्दरीणाम् ।
प्रेमातुरेण हरिणा सुविशारदेन,
श्रीमद् व्रजेशतनयेन सदाऽभिवन्द्यम् ॥८॥
सञ्चिन्तनीयमनुमृग्यमभीष्टदोहं,
संसारतापशमनं चरणं महार्हम् ।
नन्दात्मजस्य सततं मनसा गिरा च,
संसेवयामि वपुषा प्रणयेन रम्यम् ॥९॥
प्रातःस्तवमिमं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सर्वकालं क्रियास्तस्य सफलाः स्युः सदाध्रुवाः ॥१०॥

श्रीगोविन्दशरणागति स्तोत्रम्

गोविन्द गोकुलपते वसुदेवसूनो,
गोपाल कृष्ण गरुड़ध्वज गोपिनाथ।
श्रीवासुदेव पुरुषोत्तम पद्मनाभ,
त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम् ॥१॥

ब्रह्मण्यदेव जनवल्लभ दीनबन्धो,
लक्ष्मीनिवास करुणालय कंसशत्रो।
वैकुण्ठनाथ धरणीधर धर्मरूप,
त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम् ॥२॥

लक्ष्मीपते कमललोचन कल्मषारे,
वाराह वामन जनार्दन नन्दसूनो।
पीताम्बरच्युत हरे मधुकैटभारे,
त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम् ॥३॥

श्रीरामचन्द्र रघुनाथ जगच्छरण्य,
राजीवलोचन धनुर्धर रावणारे।
सीतापते रघुपते रघुवीर राम,
त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम् ॥४॥

नारायणाव्यय विभो भवबन्धनाश,
वेदान्तवेद्य यदुनन्दन विश्वरूप।
श्रीवत्स श्रीधर गदाधर शंखपाणे,
त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम् ॥५॥

गोपीपते यदुपते नवनीतचौर,
वृन्दावनेश मुरलीधर पद्मपाणे।

गोवर्द्धनोद्धरण धीर मुकुन्द शौरे,
त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम् ॥६॥

सर्वज्ञ सर्वद शरण्य कृपासमुद्र,
कारुण्यरूप कमलाकर कैटभारे।
दारिद्र्य दुःखविनिवारण विश्वबन्धो,
त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम् ।७॥

हे राधिका प्रिय अनन्त मुकुन्दकृष्ण,
विश्वेश्वराखिलगुरो कमायताक्ष।
नारायणादि पुरुषेश पुराणविष्णो,
त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम् ॥८॥

हे ईड्य यादवपते सरसीरुहाक्ष,
चैतन्यरूप परमेश्वर पूर्णकाम।
अध्यात्मदीपपरमेश पुराण जिष्णो,
त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम् ।९॥

पद्मापते मधुरिपो जगदेकसाक्षिन्,
भृत्यार्तिनाशन नरेश्वर देव-देव।
चाणूरमर्दन चतुर्भुज चक्रपाणे,
त्रायस्व केशव हरे शणागतं माम् ॥१०॥

भो राधिका हृदय जीवन सुन्दराङ्ग,
ब्रह्मादिदेव परिपालक दैत्यशत्रो।
केशि-प्रलंब-बक-धेनुक प्राणहारिन्,
त्रायस्व केशव हरे शरणागतं माम् ॥११॥

श्रीकृष्णशरणस्तोत्रं, तदीयगुणसंयुतम्।
सर्वाशुभहरं दिव्यं, पठनाद्भक्तिदन्नृणाम् ॥१२॥

एक श्लोकी भागवत

आदौ देव की देवगर्भजननं गोपीगृहेवर्द्धनं
माया पूतन जीवितापहरणं गोवर्धनोद्धारणम् ।
कंसोच्छेदन कौरवादिहननं कुन्ती सुतापालनं
एतद्भागावतं पुराण कथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ।

एक श्लोकी रामायण

आदौ रामतपो बनादिगमनं हत्वा मृगं काचनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम् ।
वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं
पश्चाद्रावण-कुम्भकर्णहननं एतद्धिरामायणम् ।।

एक श्लोकी महाभारत

आदौ पाण्डवधार्तराष्ट्र जननं लाक्षागृहे दाहनं ।
द्यूतस्त्रीहरणं बने विचरणं मत्स्याक्षिसंवेधनम् ।
लीलागोहरणं रणेविचरणं सन्ध्या क्रियावर्धनंम्
पश्चाद्भीष्मक कौरवादिहननं एतन्महाभारतम् ।।

मङ्गल कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।

मुद्रक : अर्चना प्रकाशन, अजमेर

पुस्तक मिलने के पते—



[१]

प्रचार-विभाग
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
किशनगढ़ (राज०)

[२]

पं० मुरलीधर शिवचरण शास्त्री
मु० प्रेमसरोवर (गाजीपुर)
पो० बरसाना
जि० मथुरा (उत्तर प्रदेश)

[३]

श्री सर्वेश्वर राधामाधव पुस्तकालय
निम्बार्ककोट, पृथ्वीराज मार्ग
अजमेर (राजस्थान)

मुद्रक : अर्चना प्रकाशन, १ मेहरा हाउस, काला बाग, अजमेर